

﴿ ٦ آياتها ﴾ ﴿ ٣٠ سُورَةُ الرُّومِ مَكِّيَّةٌ ١٣ ﴾ ﴿ ٦ ركوعاتها ﴾

सूरए रूम मक्किया है, इस में साठ आयतें और छ⁶ रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اللّٰهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला¹

الْم ۱ غَلَبَتِ الرُّومُ ۲ فِيْ اَدْنٰی الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَلَیْهِمْ

रूमि मग़्लूब हुए पास की ज़मीन में³ और अपनी मग़्लूबी के बा'द

سَيَغْلِبُوْنَ ۳ فِيْ بَضْعِ سِنِيْنَ ۴ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۵ وَ

अन्क़रीब ग़ालिब होंगे⁴ चन्द बरस में⁵ हुकम अल्लाह ही का है आगे और पीछे⁶ और

يَوْمِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۶ بِبَصْرِ اللّٰهِ ۷ يَبْصُرُ مَنْ يَّشَاءُ ۸ وَهُوَ

उस दिन ईमान वाले खुश होंगे अल्लाह की मदद से⁷ वोह मदद करता है जिस की चाहे और वोही है

का ठिकाना जहन्म ही है 168 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما ने फ़रमाया कि मा'ना यह हैं कि जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन्हें सवाब की राह देंगे। हज़रते जुनैद ने फ़रमाया : जो तौबा में कोशिश करेंगे उन्हें इख़लास की राह देंगे। हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ ने फ़रमाया : जो तलबे इल्म में कोशिश करेंगे उन्हें अमल की राह देंगे। हज़रते सा'द बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया : जो इक़ामते सुन्नत में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे। 169 : उन की मदद और नुसरत फ़रमाता है। 1 : सूरए रूम मक्किया है, इस में छ⁶ रुकूअ, साठ आयतें, आठ सो उन्नीस कलिमे, तीन हज़ार पांच सो चोतीस हर्फ़ हैं। 2 शाने नुज़ूल : फ़ारस और रूम के दरमियान जंग थी और चूँकि अहले फ़ारस मजूसी थे इस लिये मुश्रिकीने अरब उन का ग़लबा पसन्द करते थे, रूमि अहले किताब थे इस लिये मुसलमानों को इन का ग़लबा अच्छा मा'लूम होता था। खुस्व परवेज़ बादशाहे फ़ारस ने रूमियों पर लश्कर भेजा और कैसरे रूम ने भी लश्कर भेजा, येह लश्कर सर ज़मीने शाम के करीब मुकाबिल हुए, अहले फ़ारस ग़ालिब हुए, मुसलमानों को येह ख़बर गिरां गुज़री, कुफ़ारे मक्का इस से खुश हो कर मुसलमानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और नसारा भी अहले किताब और हम भी उम्मी और अहले फ़ारस भी उम्मी हमारे भाई अहले फ़ारस तुम्हारे भाइयों रूमियों पर ग़ालिब हुए हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। इस पर येह आयतें नाज़िल हुई और इन में ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूमि अहले फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएंगे। येह आयतें सुन कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رضي الله تعالى عنه ने कुफ़ारे मक्का में जा कर ए'लान कर दिया कि खुदा की कसम रूमि ज़रूर अहले फ़ारस पर ग़लबा पाएंगे, ऐ अहले मक्का ! तुम इस वक़्त के नतीजए जंग से खुश मत हो, हमें हमारे नबी صلی الله تعالى علیه وسلم ने ख़बर दी है। उबय्य बिन ख़लफ़ काफ़िर आप के मुकाबिल खड़ा हो गया और आप के उस के दरमियान सो सो ऊंट की शर्त हो गई अगर नव साल में अहले फ़ारस ग़ालिब आ जाएं तो हज़रते सिद्दीक رضي الله تعالى عنه उबय्य को सो ऊंट देंगे और अगर रूमि ग़ालिब आ जाएं तो उबय्य हज़रते सिद्दीक رضي الله تعالى عنه को सो ऊंट देगा, उस वक़्त तक किमार की हुरमत नाज़िल न हुई थी। मस्अला : और हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा व इमाम मुहम्मद رضي الله تعالى عنهما के नज़्दीक हर्बी कुफ़ारे के साथ उकूदे फ़ासिदा रिबा वगैरा जाइज़ हैं और येही वाक़िआ इन की दलील है। अल किस्सा सात साल के बा'द इस ख़बर का सिद्क़ जाहिर हुवा और जंगे हुदैबिया या बद्र के दिन रूमि अहले फ़ारस पर ग़ालिब आए और रूमियों ने मदाइन में अपने घोड़े बांधे और इराक़ में रूमिया नामी एक शहर की बिना रखी और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رضي الله تعالى عنه ने शर्त के ऊंट उबय्य की औलाद से वुसूल कर लिये क्यूं कि वोह इस दरमियान में मर चुका था। सय्यिदे आलम صلی الله تعالى علیه وسلم ने हज़रते सिद्दीक رضي الله تعالى عنه को हुकम दिया कि शर्त के माल को सदक़ा कर दें। येह ग़ैबी ख़बर हुज़ूर सय्यिदे आलम صلی الله تعالى علیه وسلم की सिहहते नुबुव्वत और कुरआने करीम के कलामे इलाही होने की रोशन दलील है। 3 : या'नी शाम की उस सर ज़मीन में जो फ़ारस के करीब तर है। 4 : अहले फ़ारस पर 5 : जिन की हृद नव बरस है। 6 : या'नी रूमियों के ग़लबे से पहले भी और उस के बा'द भी। मुराद येह है कि पहले अहले फ़ारस का ग़ालिब होना और दोबारा अहले रूम का येह सब अल्लाह के अग्र व इरादे और उस के क़जा व क़दर से है। 7 : कि उस ने किताबियों को ग़ैर किताबियों पर ग़लबा दिया और उसी रोज़ बद्र में मुसलमानों को मुश्रिकों पर और मुसलमानों का सिद्क़ और नबिय्ये करीम صلی الله تعالى علیه وسلم और कुरआने करीम की ख़बर की तस्दीक़ जाहिर फ़रमाई।

الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۵ وَعَدَّ اللَّهُ ۶ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ

इज्जत वाला मेहरबान **अल्लाह** का वा'दा⁸ **अल्लाह** अपना वा'दा खिलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत

النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۶ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ

लोग नहीं जानते⁹ जानते हैं आंखों के सामने की दुन्यवी ज़िन्दगी¹⁰ और वोह

عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ۷ أَوْلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ۸ مَا خَلَقَ

आखिरत से पूरे बे खबर हैं क्या उन्होंने ने अपने जी में न सोचा कि **अल्लाह** ने

اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَيِّ ۹

पैदा न किये आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है मगर हक़¹¹ और एक मुक़रर मीअद से¹² और

إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِي رَبِّهِمْ لَكْفُرُونَ ۸ أَوْلَمْ يَسِيرُوا فِي

बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने का इन्कार रखते हैं¹³ और क्या उन्होंने ने ज़मीन में

الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۹ كَانُوا أَشَدَّ

सफ़र न किया कि देखते कि उन से अगलों का अन्जाम कैसा हुवा¹⁴ वोह उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَشَارُوا إِلَى الْأَرْضِ وَعَمَرُوهَا أَكْثَر مِمَّا عَمَرُوهَا وَ

ज़ियादा जोर आवर थे और ज़मीन जोती और आबाद की उन¹⁵ की आबादी से ज़ियादा और

جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۹ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا

उन के रसूल उन के पास रोशन निशानियां लाए¹⁶ तो **अल्लाह** की शान न थी कि उन पर जुल्म करता¹⁷ हां वोह

أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۱۰ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ آسَاءُوا السُّوْأَى

खुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते थे¹⁸ फिर जिन्होंने ने हद भर की बुराई की उन का अन्जाम येह हुवा

8 : जो उस ने फ़रमाया था कि रूमी चन्द बरस में फिर ग़ालिब होंगे । 9 : या'नी बे इल्म हैं । 10 : तिजारत ज़िराअत ता'मीर वगैरा दुन्यवी धन्दे । इस में इशारा है कि दुन्या की भी हक़ीक़त नहीं जानते इस का भी ज़ाहिर ही जानते हैं । 11 : या'नी आस्मान व ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है **अल्लाह** तअलाला ने इन को अबस और बातिल नहीं बनाया, इन की पैदाइश में बे शुमार हिकमतें हैं । 12 : या'नी हमेशा के लिये नहीं बनाया बल्कि एक मुदत मुअय्यन कर दी है जब वोह मुदत पूरी हो जावेगी तो येह फ़ना हो जाएंगे और वोह मुदत क़ियामत काइम होने का वक़्त है । 13 : या'नी बअसे बा'दल मौत पर ईमान नहीं लाते । 14 : कि रसूलों की तकज़ीब के बाइस हलाक किये गए, उन के उजड़े हुए दियार और उन की बरबादी के आसार देखने वालों के लिये मूजिबे इब्रत हैं । 15 : अहले मक्का 16 : तो वोह उन पर ईमान न लाए । पस **अल्लाह** तअलाला ने उन्हें हलाक किया । 17 : उन के हुकूक कम कर के और उन्हें बिगैर ज़ुर्म के हलाक कर के । 18 : रसूलों की तकज़ीब कर के अपने आप को मुस्तहिके अज़ाब बना कर ।

أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ⑩ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ

कि **अल्लाह** की आयतें झुटलाने लगे और उन के साथ तमस्वुर करते **अल्लाह** पहले बनाता है

ثُمَّ يُعِيدُهُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑪ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ

फिर दोबारा बनाएगा¹⁹ फिर उस की तरफ़ फिरोगे²⁰ और जिस दिन क़ियामत काइम होगी मुजरिमों की

الْجُرْمُونَ ⑫ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا إِشْرَاقِيهِمْ

आस टूट जाएगी²¹ और उन के शरीक²² उन के सिफ़ारिशी न होंगे और वोह अपने शरीकों से

كُفْرَيْنَ ⑬ وَ يَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَ يَتَفَرَّقُونَ ⑭ فَأَمَّا

मुन्किर हो जाएंगे और जिस दिन क़ियामत काइम होगी उस दिन अलग हो जाएंगे²³ तो वोह

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ⑮ وَأَمَّا

जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ की क्यारी में उन की खातिर दारी होगी²⁴ और वोह

الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَإِقْآئِي الْآخِرَةِ فَأُولَئِكَ فِي الْعَذَابِ

जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आख़िरत का मिलना झुटलाया²⁵ वोह अज़ाब में ला धरे (डाले)

مُحْضَرُونَ ⑯ فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ⑰ وَلَهُ

जाएंगे²⁶ तो **अल्लाह** की पाकी बोलो²⁷ जब शाम करो²⁸ और जब सुब्ह हो²⁹ और उसी की

الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ⑱ يُخْرِجُ

ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में³⁰ और कुछ दिन रहे³¹ और जब तुम्हें दोपहर हो³² वोह ज़िन्दा को

19 : या'नी बा'दे मौत जिन्दा कर के। 20 : तो आ'माल की जज़ा देगा। 21 : और किसी नफ़अ और भलाई की उम्मीद बाकी न रहेगी। बा'ज मुफ़स्सरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि उन का कलाम मुन्क़तअ हो जाएगा वोह साकित रह जाएंगे क्यूं कि उन के पास पेश करने के काबिल कोई हुज्जत न होगी। बा'ज मुफ़स्सरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि वोह रुस्वा होंगे 22 : या'नी बुत जिन्हें वोह पूजते थे 23 : मोमिन और काफ़िर फिर कभी जम्अ न होंगे। 24 : या'नी बुस्ताने जन्नत में उन का इक्राम किया जाएगा जिस से वोह खुश होंगे, येह खातिर दारी जन्नती ने'मतों के साथ होगी। एक कौल येह भी है कि इस से मुराद समाअ है कि उन्हें नमाते तुरब अंगेज़ सुनाए जाएंगे जो **अल्लाह** तबारक व तआला की तस्बीह पर मुशतमिल होंगे। 25 : बअस व हशर के मुन्किर हुए। 26 : न उस अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो न उस से कभी निकलें। 27 : पाकी बोलने से या तो **अल्लाह** तआला की तस्बीह व सना मुराद है और इस की अहादीस में बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं या इस से नमाज़ मुराद है। हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से दरयाप्त क्या गया कि क्या पन्जगाना नमाज़ों का बयान कुरआने पाक में है ? फ़रमाया : हां और येह आयतें तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि इन में पांचों नमाज़ें और इन के अवक़ात मज़कूर हैं। 28 : इस में मग़रिब व इशा की नमाज़ें आ गईं। 29 : येह नमाज़ें फ़ज़्र हुईं। 30 : या'नी आस्मान और ज़मीन वालों पर उस की हम्द लाजिम है। 31 : या'नी तस्बीह करो कुछ दिन रहे, येह नमाज़ें अम्स हुईं। 32 : येह नमाज़ें जोहर हुईं। **हिक्मत** : नमाज़ के लिये येह पन्जगाना अवक़ात मुक़रर फ़रमाए गए इस लिये कि अफ़ज़ले आ'माल वोह है जो मुदाम हो और इन्सान येह कुदरत नहीं रखता कि अपने तमाम अवक़ात नमाज़ में सर्फ़ करे क्यूं कि इस के साथ खाने पीने वग़ैरा के हवाइज व ज़रूरिय्यात हैं तो **अल्लाह** तआला ने बन्दे पर इबादत में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाई और दिन के अव्वल व औसत व

الْحَيِّ مِنَ السَّبِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ

निकालता है मुर्दे से³³ और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से³⁴ और ज़मीन को जिलाता (सर सब्जो शादाब करता) है उस के

مَوْتِهَا ۖ وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ ١٩ ۚ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ

मरे पीछे³⁵ और यूँ ही तुम निकाले जाओगे³⁶ और उस की निशानियों से है यह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से³⁷

ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۝ ٢٠ ۚ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ

फिर जभी तुम इन्सान हो दुनिया में फैले हुए और उस की निशानियों से है कि तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से

أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ

जोड़े बनाए कि उन से आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महबूबत और रहमत रखी³⁸ बेशक इस में

لَايَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ ٢١ ۚ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिये और उस की निशानियों से है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश

وَإِخْتِلَافِ أَلْسِنَتِكُمْ وَالْوَأْنِكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝ ٢٢ ۚ

और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़लाफ़³⁹ बेशक इस में निशानियां हैं जानने वालों के लिये और

مِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّ فِي

उस की निशानियों में से है रात और दिन में तुम्हारा सोना⁴⁰ और उस का फ़ज़ल तलाश करना⁴¹ बेशक इस

ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُسْعَعُونَ ۝ ٢٣ ۚ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَ

में निशानियां हैं सुनने वालों के लिये⁴² और उस की निशानियों से है कि तुम्हें बिजली दिखाता है डराती⁴³ और

طَمَعًا وَيُنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ إِنَّ

उम्मीद दिलाती⁴⁴ और आस्मान से पानी उतारता है तो उस से ज़मीन को ज़िन्दा करता है उस के मरे पीछे बेशक

आखिर में और रात के अब्वल व आख़िर में नमाज़ें मुकर्रर कीं ताकि इन अवकात में मशगूले नमाज़ रहना दाइमी इबादत के हुक्म में हो ।

33 : (مَارَكٌ وَخَانٌ) जैसे कि परिन्द को अन्डे से और इन्सान को नुत्फे से और मोमिन को काफ़िर से । 34 : जैसे कि अन्डे को परिन्द से, नुत्फे

को इन्सान से, काफ़िर को मोमिन से 35 : या'नी खुशक हो जाने के बाद माँह बरसा कर सब्जा उगा कर । 36 : कब्रों से बअूस व हिसाब के

लिये । 37 : तुम्हारा जहे आ'ला और तुम्हारी अस्ल हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के । 38 : कि बिगैर किसी पहली मा'रिफ़त

और बिगैर किसी कराबत के एक को दूसरे के साथ महबूबत व हमदर्दी है । 39 : ज़बानों का इख़लाफ़ तो यह है कि कोई अरबी बोलता है

कोई अज़मी, कोई और कुछ, और रंगतों का इख़लाफ़ यह है कि कोई ग़ोरा है कोई काला कोई गन्दुमी और यह इख़लाफ़ निहायत अज़ीब

है क्यूँ कि सब एक अस्ल से हैं और सब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद हैं । 40 : जिस से तकान दूर होती है और राहत हासिल होती है ।

41 : फ़ज़ल तलाश करने से कस्बे मआश मुराद है । 42 : जो गोशे होश से सुनें । 43 : गिरने और नुक़सान पहुंचाने से 44 : बारिश की ।

فِي ذَلِكَ آيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَ

इस में निशानियां हैं अक्ल वालों के लिये⁴⁵ और उस की निशानियों से है कि उस के हुक्म से आस्मान

الْأَرْضُ بِأَمْرٍ ۖ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ

और ज़मीन काइम हैं⁴⁶ फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा फ़रमाएगा⁴⁷ जभी तुम

تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾ وَلَهُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهِ قَانِتُونَ ﴿٢٦﴾ وَ

निकल पड़ोगे⁴⁸ और उसी के हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं सब उस के ज़ेरे हुक्म हैं और

هُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۖ وَلَهُ الْمَثَلُ

वोही है कि अव्वल बनाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा⁴⁹ और यह तुम्हारी समझ में इस पर ज़ियादा आसान होना चाहिये⁵⁰ और उसी के लिये है

الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾ ضَرَبَ

सब से बरतर शान आस्मानों और ज़मीन में⁵¹ और वोही इज्जतो हिकमत वाला है तुम्हारे लिये⁵² एक

لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ۖ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ

कहावत बयान फ़रमाता है खुद तुम्हारे अपने हाल से⁵³ क्या तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ के माल गुलामों में से कुछ शरीक हैं⁵⁴

فِي مَآرَازِكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۖ

उस में जो हम ने तुम्हें रोज़ी दी⁵⁵ तो तुम सब इस में बराबर हो⁵⁶ तुम उन से डरो⁵⁷ जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो⁵⁸

كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا

हम ऐसी मुफ़स्सल निशानियां बयान फ़रमाते हैं अक्ल वालों के लिये बल्कि ज़ालिम⁵⁹ अपनी ख़्वाहिशों

45 : जो सोचें और कुदरते इलाही पर गौर करें । 46 : हज़रते इब्ने अब्बास और हज़रते इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह दोनों बिगैर किसी सहारे के काइम हैं । 47 : या'नी तुम्हें क़ब्रों से बुलाएगा इस तरह कि हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام क़ब्र वालों के उठाने के लिये सूर फूंकेंगे तो अव्वलीन व आख़रीन में से कोई ऐसा न होगा जो न उठे । चुनान्चे इस के बा'द ही इशाद फ़रमाता है : 48 : या'नी क़ब्रों से जिन्दा हो कर । 49 : हलाक होने के बा'द । 50 : क्यूं कि इन्सानों का तजरिबा और इन की राय येही बताती है कि शै का इआदा (दोबारा बनाना) उस की इब्तिदा से सहल (आसान) होता है और **اَللّٰهُ** तआला के लिये कुछ भी दुश्वार नहीं । 51 : कि उस जैसा कोई नहीं, वोह मा'बूदे बरहक़ है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं । 52 : ऐ मुशिरको ! 53 : वोह मसल (कहावत) यह है 54 : या'नी क्या तुम्हारे गुलाम तुम्हारे साझी हैं 55 : मालो मताअ वगैरा 56 : या'नी आका और गुलाम को उस मालो मताअ में यकसां इस्तिहकाक़ हो, ऐसा कि 57 : अपने मालो मताअ में बिगैर उन गुलामों की इजाज़त के तसररफ़ करने से 58 : मुद्आ येह है कि तुम किसी तरह अपने मम्लूकों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं कर सकते तो कितना जुल्म है कि **اَللّٰهُ** तआला के मम्लूकों को उस का शरीक करार दो । ऐ मुशिरकीन तुम **اَللّٰهُ** तआला के सिवा जिन्हें अपना मा'बूद करार देते हो वोह उस के बन्दे और मम्लूक हैं । 59 : जिन्हों ने शिक़ कर के अपनी जानों पर जुल्मे अज़ीम किया है ।

أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَنَنْهَيْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَا لَهُمْ مِّنْ

के पीछे हो लिये बे जाने⁶⁰ तो उसे कौन हिदायत करे जिसे खुदा ने गुमराह किया⁶¹ और उन का कोई

نَصِيرِينَ ﴿١٩﴾ فَأَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۖ فطَرَتِ اللَّهُ التَّتَى فَطَرَ

मददगार नहीं⁶² तो अपना मुंह सीधा करो **अल्लाह** की इताअत के लिये एक अकेले उसी के हो कर⁶³ **अल्लाह** की डाली हुई बिना जिस पर

النَّاسَ عَلَيْهَا ۖ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۖ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۗ وَلَكِنَّ

लोगों को पैदा किया⁶⁴ **अल्लाह** की बनाई चीज़ न बदलना⁶⁵ येही सीधा दीन है मगर

أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٠﴾ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ

बहुत लोग नहीं जानते⁶⁶ उस की तरफ़ रुजूअ लाते हुए⁶⁷ और उस से डरो और नमाज़ काइम रखो

وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٢١﴾ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا

और मुश्रिकों से न हो उन में से जिन्होंने ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया⁶⁸ और हो गए

شِيْعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٢٢﴾ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ

गुरौह गुरौह हर गुरौह जो उस के पास है उस पर खुश है⁶⁹ और जब लोगों को तकलीफ़ पहुंचती है⁷⁰

دَعَا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَاهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِحُوا

तो अपने रब को पुकारते हैं उस की तरफ़ रुजूअ लाते हुए फिर जब वोह उन्हें अपने पास से रहमत का मज़ा देता है⁷¹ जभी उन में से

مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۖ فَتَسْتَعِزُّوا ۚ فَسَوْفَ

एक गुरौह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि हमारे दिये की नाशुकी करें तो बरत लो⁷² अब करीब

تَعْلَمُونَ ﴿٢٤﴾ أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَبَّرُ بِمَا كَانُوا يٰهٖ

जानना चाहते हो⁷³ या हम ने उन पर कोई सनद उतारी⁷⁴ कि वोह उन्हें हमारे शरीक

60 : जहालत से 61 : या'नी कोई उस का हिदायत करने वाला नहीं। 62 : जो उन्हें अज़ाबे इलाही से बचा सके 63 : या'नी खुलूस के साथ दीने इलाही पर ब इस्तिक़ामत व इस्तिक़ाल काइम रहे। 64 : "फितरत" से मुराद दीने इस्लाम है, मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआला ने ख़ल्क को ईमान पर पैदा किया जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हर बच्चा फितरत पर पैदा किया जाता है या'नी उसी अहद पर जो "أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ" फरमा कर लिया गया है। बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है : फिर उस के मां बाप उस को यहूदी या नसरानी या मजूसी बना लेते हैं। इस आयत में हुक्म दिया गया कि दीने इलाही पर काइम रहे जिस पर **अल्लाह** तआला ने ख़ल्क को पैदा किया है। 65 : या'नी दीने इलाही पर काइम रहना। 66 : इस की हकीकत को तो इस दीन पर काइम रहे। 67 : या'नी **अल्लाह** तआला की तरफ़ तौबा और ताअत के साथ। 68 : मा'बूद के बाब में इख़िलाफ़ कर के 69 : और अपने बातिल को हक़ गुमान करता है। 70 : मरज़ की या कहत की या इस के सिवा और कोई 71 : उस तकलीफ़ से ख़लासी इनायत करता है और राहत अता फरमाता है 72 : दुन्यवी ने'मतों को चन्द रोज़। 73 : कि आख़िरत में तुम्हारा क्या हाल होता है और इस दुन्या तलबी का क्या नतीजा निकलने वाला है। 74 : कोई हुज्जत या कोई किताब।

يُشْرِكُونَ ﴿٢٥﴾ وَإِذَا آذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِبْهُمْ

बता रही है⁷⁵ और जब हम लोगों को रहमत का मजा देते हैं⁷⁶ इस पर खुश हो जाते हैं⁷⁷ और अगर उन्हें कोई

سَيِّئَةٌ بِهَا قَدَمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْتَضُونَ ﴿٣٦﴾ أَوْلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ

बुराई पहुंचे⁷⁸ बदला उस का जो उन के हाथों ने भेजा⁷⁹ जभी वोह ना उम्मीद हो जाते हैं⁸⁰ और क्या उन्होंने ने न देखा कि **اللَّهُ**

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ

रिज़क वसीअ फ़रमाता है जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे बेशक इस में निशानियां हैं

يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ ۗ ذَلِكَ

ईमान वालों के लिये तो रिश्तेदार को उस का हक़ दो⁸¹ और मिसकीन और मुसाफ़िर को⁸² यह

خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا

बेहतर है उन के लिये जो **اللَّهُ** की रिज़ा चाहते हैं⁸³ और उन्हीं का काम बना और

اتَّبَيْتُمْ مِّنْ رَبَّالَّذِينَ يَرْبُوا فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَمَا

तुम जो चीज़ ज़ियादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें तो वोह **اللَّهُ** के यहां न बढ़ेगी⁸⁴ और जो

اتَّبَيْتُمْ مِّنْ زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّعِيفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ

तुम ख़ैरात दो **اللَّهُ** की रिज़ा चाहते हुए⁸⁵ तो उन्हीं के दूने हैं⁸⁶ **اللَّهُ** है

الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُبَيِّتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ هَلْ مِنْ

जिस ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाए (जिन्दा करे)गा⁸⁷ क्या

شُرَكَاءِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذِكْرِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا

तुम्हारे शरीकों में⁸⁸ भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ करे⁸⁹ पाकी और बरतरी है उसे

75 : और शिर्क करने का हुक्म देती है, ऐसा नहीं है न कोई हुज्जत है न कोई सनद । 76 : या'नी तन्दुरुस्ती और वुस्अते रिज़क का 77 : और इतराते हैं । 78 : कहूत या ख़ौफ़ या और कोई बला 79 : या'नी उन की मा'सियतों और उन के गुनाहों का 80 : **اللَّهُ** तआला की रहमत से और यह बात मोमिन की शान के खिलाफ़ है क्यूं कि मोमिन का हाल यह है कि जब उसे ने'मत मिलती है तो शुक्र गुज़ारी करता है और जब सख़ती होती है तो **اللَّهُ** तआला की रहमत का उम्मीद वार रहता है । 81 : उस के साथ सुलूक और एहसान करो 82 : उन के हक़ दो सदका दे कर और मेहमान नवाज़ी कर के । मस्अला : इस आयत से महारिम के नफ़के का वुजूब साबित होता है । 83 : और **اللَّهُ** तआला से सवाब के तालिब हैं । 84 : लोगों का दस्तूर था कि वोह दोस्त अहबाब और आशनाओं को या और किसी शख्स को इस निय्यत से हदिyyा देते थे कि वोह उन्हें इस से ज़ियादा देगा, यह जाइज़ तो है लेकिन इस पर सवाब न मिलेगा, इस में बरकत न होगी क्यूं कि यह अमल ख़ालिसन लिल्लाहि तआला नहीं हुवा । 85 : न इस से बदला लेना मक़सूद हो न नामो नुमूद 86 : उन का अज़ो सवाब ज़ियादा होगा, एक नेकी का दस गुना ज़ियादा दिया जाएगा । 87 : पैदा करना, रोज़ी देना, मारना, जिलाना यह सब काम **اللَّهُ** ही के हैं ।

يُشْرِكُونَ ۳۰ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ

उन के शिर्क से चमकी खराबी खुश्की और तरी में⁹⁰ उन बुराइयों से जो लोगों के हाथों ने कमाई

لِيَذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۳۱ قُلْ سِيرُوا فِي

ताकि उन्हें उन के बा'ज कौतकों (बुरे कामों) का मज़ा चखाए कहीं वोह बाज आएं⁹¹ तुम फ़रमाओ ज़मीन

الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۖ كَانَ أَكْثَرُهُمْ

में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा अगलों का उन में बहुत

مُشْرِكِينَ ۳۲ فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا

मुशिरक थे⁹² तो अपना मुंह सीधा कर इबादत के लिये⁹³ क़बूल इस के कि वोह दिन आए जिसे **اللَّهُ**

مَرَدَّدَ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ۳۳ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَمَنْ

की तरफ़ से टलना नहीं⁹⁴ उस दिन अलग फट जाएंगे⁹⁵ जो कुफ़र करे उस के कुफ़र का ववाल उसी पर और जो

عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نُنْفِئُهُمْ يَهْدُونَ ۳۴ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

अच्छा काम करें वोह अपने ही लिये तय्यारी कर रहे हैं⁹⁶ ताकि सिला दे⁹⁷ उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे

الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ۳۵ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ

काम किये अपने फ़ज़ल से बेशक वोह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता और उस की निशानियों से है कि

يُرْسِلَ الرِّياحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيَذِيْقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلُكُ

हवाएं भेजता है मुज्दा सुनाती⁹⁸ और इस लिये कि तुम्हें अपनी रहमत का जाएका दे और इस लिये कि कश्ती⁹⁹ उस

بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۳۶ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا

के हुक्म से चले और इस लिये कि उस का फ़ज़ल तलाश करो¹⁰⁰ और इस लिये कि तुम हक़ मानो¹⁰¹ और बेशक हम ने तुम

88 : या'नी बुतों में जिन्हें तुम **اللَّهُ** तआला का शरीक ठहराते हो उन में 89 : इस के जवाब से मुशिरकीन आजिज़ हुए और उन्हें

दम मारने की मजाल न हुई तो फ़रमाता है 90 : शिर्क व मअ़सी के सबब से कहत और इम्साके बारां (बारिश का रुक जाना) और किल्लते

पैदावार और खेतियों की खराबी और तिजारतों के नुकसान और आदमियों और जानवरों में मौत और कस्ते आतश ज़दगी और ग़र्क और हर

शै में बे बरकती 91 : कुफ़र व मअ़सी से और ताइब हों । 92 : अपने शिर्क के बाइस हलाक किये गए, उन के मनाज़िल और मसाकिन वीरान

पड़े हैं, उन्हें देख कर इब्रत हासिल करो । 93 : या'नी दीने इस्लाम पर मज़बूती के साथ काइम रहो । 94 : या'नी रोज़े क़ियामत । 95 :

या'नी हिसाब के बा'द मुतफ़र्रिक हो जाएंगे, जन्नती जन्नत की तरफ़ जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ की तरफ़ । 96 : कि मनाज़िले जन्नत में राहत

व आराम पाएं 97 : और सवाब अत्ता फ़रमाए **اللَّهُ** तआला 98 : बारिश और कस्ते पैदावार का 99 : दरिया में उन हवाओं से

100 : या'नी दरियाइं तिजारतों से कस्बे मअ़ाश करो 101 : उन ने'मतों का और **اللَّهُ** की तौहीद क़बूल करो ।

مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاذْتَقَنَّا مِنْ

से पहले कितने रसूल उन की क़ौम की तरफ़ भेजे तो वोह उन के पास खुली निशानियां लाए¹⁰² फिर हम ने

الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۗ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۳۷﴾ اللَّهُ الَّذِي

मुजरिमों से बदला लिया¹⁰³ और हमारे ज़िम्मे करम पर है मुसल्मानों की मदद फ़रमाना¹⁰⁴ **اللَّهُ** है कि

يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَ

भेजता है हवाएं कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आस्मान में जैसा चाहे¹⁰⁵ और

يَجْعَلُهُ كَسْفًا فَتَرَىٰ الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۗ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ

उसे पारा पारा करता है¹⁰⁶ तो तू देखे कि उस के बीच में से मीह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचता है¹⁰⁷

يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿۳۸﴾ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ

अपने बन्दों में जिस की तरफ़ चाहे जभी वोह खुशियां मनाते हैं अगर्चे उस के उतारने

يُنزَّلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿۳۹﴾ فَانظُرْ إِلَىٰ أَثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ

से पहले आस तोड़े हुए थे तो **اللَّهُ** की रहमत के असर देखो¹⁰⁸ क्यूंकर

يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ إِنَّ ذَلِكَ لَمُسْحِي الْبُوتَىٰ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

ज़मीन को जिलाता (सर सब्ज करता) है उस के मरे पीछे¹⁰⁹ बेशक वोह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वोह सब कुछ

قَدِيرٌ ﴿۴۰﴾ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا الظُّلُومِ مِنْ بَعْدِهِ

कर सकता है और अगर हम कोई हवा भेजे¹¹⁰ जिस से वोह खेती को ज़र्द देखे¹¹¹ तो ज़रूर इस के बाद

يَكْفُرُونَ ﴿۴۱﴾ فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْبُوتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الصَّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا ذَاوَلُوا

नाशुकी करने लगे¹¹² इस लिये कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते¹¹³ और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वोह पीट

102 : जो उन रसूलों के सिद्धे रिस्सालत पर दलीले वाज़ेह थीं तो उस क़ौम में से बा'ज ईमान लाए और बा'ज ने कुफ़्र किया । 103 : कि दुन्या में उन्हें अज़ाब कर के हलाक कर दिया । 104 : या'नी उन्हें नजात देना और काफ़िरों को हलाक करना । इस में नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को आखिरत की काम्याबी और आ'दा पर फ़त्हो नुसरत की बिशारत दी गई है । तिरमिज़ी की हदीस में है : जो मुसल्मान अपने भाई की आबरू बचाएगा **اللَّهُ** तआला उसे रोज़े कियामत जहन्नम की आग से बचाएगा । येह फ़रमा कर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने येह आयत तिलावत फ़रमाई "كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ" 105 : क़लील या क़सीर 106 : या'नी कभी तो **اللَّهُ** तआला अत्रे मुहीत भेज देता है जिस से आस्मान घिरा मा'लूम होता है और कभी मुतफ़र्रिक टुकड़े अ़लाहदा अ़लाहदा । 107 : या'नी मीह को 108 : या'नी बारिश के असर जो उस पर मुरत्तब होते हैं कि बारिश ज़मीन को सैराब करती है, उस से सब्जा निकलता है, सब्जे से फ़ल पैदा होते हैं, फ़लों में गिज़ाइयत होती है और इस से जानदारों के अज्साम के क़िवाम को मदद पहुंचती है और येह देखो कि **اللَّهُ** तआला येह सब्जे और फ़ल पैदा कर के 109 : और खुशुक मैदान को सब्जा ज़ार बना देता है, जिस की येह कुदरत है 110 : ऐसी जो खेती और सब्जे के लिये मुज़िर हो 111 : बा'द इस

مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾ وَمَا أَنْتَ بِهَدِ الْعُبَى عَنْ صَلَاتِهِمْ ۖ إِنَّ سَمِعَ إِلَّا مَنْ

दे कर फिर¹¹⁴ और न तुम अन्धों को¹¹⁵ उन की गुमराही से राह पर लाओ तुम तो उसी को सुनाते हो जो

يَوْمٍ مِنْ بَايْتِنَاهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ

हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वोह गरदन रखे हुए हैं **अल्लाह** है जिस ने तुम्हें इब्तिदा में कमजोर बनाया¹¹⁶ फिर

جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۗ

तुम्हें ना तुवानी से ताकत बख्शी¹¹⁷ फिर कुव्वत के बा'द¹¹⁸ कमजोरी और बुढ़ापा दिया

يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ

बनाता है जो चाहे¹¹⁹ और वोही इल्म व कुदरत वाला है और जिस दिन क़ियामत काइम होगी

يُقَسِّمُ الْجُرْمُونَ ۗ مَا لِبَثْوَا غَيْرِ سَاعَةٍ ۗ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

मुजरिम क़सम खाएंगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी¹²⁰ वोह ऐसे ही औंधे जाते थे¹²¹

وَقَالَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى

और बोले वोह जिन को इल्म और ईमान मिला¹²² बेशक तुम रहे **अल्लाह** के लिखे हुए में¹²³

के कि वोह सर सब्जो शादाब थी । 112 : या'नी खेती ज़र्द होने के बा'द नाशुकी करने लगें और पहली ने'मत से भी मुकर जाएं । मा'ना येह हैं कि उन लोगों की हालत येह है कि जब उन्हें रहमत पहुंचती है रिज़क मिलता है खुश हो जाते हैं और जब कोई सख़्ती आती है खेती खराब होती है तो पहली ने'मतों से भी मुकर जाते हैं । चाहिये तो येह था कि **अल्लाह** तआला पर तवक्कुल करते और जब ने'मत पहुंचती शुक्र बजा लाते और जब बला आती सब्र करते और दुआ व इस्तिफ़ार में मशगूल होते । इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआला अपने हबीबे अकरम सय्यिदे आलम **صلى الله تعالى عليه وسلم** की तसल्ली फ़रमाता है कि आप उन लोगों की महरूमि और उन के ईमान न लाने पर रन्जीदान न हों 113 : या'नी जिन के दिल मर चुके और उन से किसी तरह कबूले हक़ की तवक्कोअ नहीं रही । 114 : या'नी हक़ के सुनने से बहरे हों और बहरे भी ऐसे कि पीठ दे कर फिर गए, उन से किसी तरह समझने की उम्मीद नहीं । 115 : यहां अन्धों से भी दिल के अन्धे मुराद हैं । इस आयत से बा'ज लोगों ने मुर्दों के न सुनने पर इस्तिदलाल किया है, मगर येह इस्तिदलाल सहीह नहीं क्यूं कि यहां मुर्दों से मुराद कुफ़ार हैं जो दुन्यवी ज़िन्दगी तो रखते हैं मगर पन्दो मौइज़त से मुन्तफ़ेअ नहीं होते, इस लिये उन्हें अम्वात से तशबीह दी गई जो दारुल अमल से गुजर गए और वोह पन्दो नसीहत से मुन्तफ़ेअ नहीं हो सकते, लिहाज़ा आयत से मुर्दों के न सुनने पर सनद लाना दुरुस्त नहीं और ब कसरत अहदादीस से मुर्दों का सुनना और अपनी क़ब्रों पर ज़ियारत के लिये आने वालों को पहचानना साबित है । 116 : इस में इन्सान के अहवाल की तरफ़ इशारा है कि पहले वोह मां के पेट में जनीन था, फिर बच्चा हो कर पैदा हुवा, शीर ख़ार रहा, येह अहवाल निहायत जो'फ़ के हैं । 117 : या'नी बचपन के जो'फ़ के बा'द जवानी की कुव्वत अत्ता फ़रमाई 118 : या'नी जवानी की कुव्वत के बा'द 119 : जो'फ़ और कुव्वत और जवानी और बुढ़ापा येह सब **अल्लाह** के पैदा किये से हैं 120 : या'नी आख़िरत को देख कर उस को दुन्या या क़ब्र में रहने की मुद्दत बहुत थोड़ी मा'लूम होगी, इस लिये वोह इस मुद्दत को एक घड़ी से ता'बीर करेंगे । 121 : या'नी ऐसे ही दुन्या में ग़लत और बातिल बातों पर जमते और हक़ से फिरते थे और बअस का इन्कार करते थे जैसे कि अब क़ब्र या दुन्या में ठहरने की मुद्दत को क़सम खा कर एक घड़ी बता रहे हैं, उन की इस क़सम से **अल्लाह** तआला उन्हें तमाम अहले महशर के सामने रुस्वा करेगा और सब देखेंगे कि ऐसे मज्मए आम में क़सम खा कर ऐसा सरीह झूट बोल रहे हैं । 122 : या'नी अम्बिया और मलाएका और मोमिनीन इन का रद करेंगे और फ़रमाएंगे कि तुम झूट कहते हो 123 : या'नी जो **अल्लाह** तआला ने अपने साबिक इल्म में लौहे महफूज़ में लिखा उसी के मुताबिक़ तुम क़ब्रों में रहे ।

یَوْمَ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿۵۶﴾

उठने के दिन तक तो यह है वोह दिन उठने का¹²⁴ लेकिन तुम न जानते थे¹²⁵

فِيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعَدْرَاتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿۵۷﴾

तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उन की मा'ज़िरत और न उन से कोई राज़ी करना मांगे¹²⁶

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ

और बेशक हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में हर किस्म की मिसाल बयान फ़रमाई¹²⁷ और अगर तुम इन के पास कोई

بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿۵۸﴾ كَذَلِكَ

निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर बातिल पर यूं ही

يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۵۹﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ

मोहर कर देता है **अल्लाह** जाहिलों के दिलों पर¹²⁸ तो सब करो¹²⁹ बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है¹³⁰

وَلَا يَسْتَخَفُّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿۶۰﴾

और तुम्हें सबुक न कर दें वोह जो यकीन नहीं रखते¹³¹

﴿ ایتھا ۳۲ ﴾ ﴿ ۳۱ سُورَةُ لُقْمَانَ مَكِّيَّةٌ ﴾ ﴿ ۲ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ۴ ﴾

सूरए लुक़्मान मक्किय्या है, इस में चोतीस आयतें और चार रूक़अ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

الْم ﴿۱﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿۲﴾ هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْحَسَنِينَ ﴿۳﴾

येह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं हिदायत और रहमत हैं नेकों के लिये

124 : जिस के तुम दुन्या में मुन्किर थे 125 : दुन्या में कि वोह हक़ है ज़रूर वाक़ेअ होगा, अब तुम ने जाना कि वोह दिन आ गया और उस का आना हक़ था तो उस वक़्त का जानना तुम्हें नफ़अ न देगा जैसा कि **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : 126 : या'नी न उन से येह कहा जाए कि तौबा कर के अपने रब को राज़ी करो जैसा कि दुन्या में उन से तौबा त़लब की जाती थी । 127 : ताकि उन्हें तम्बीह हो और इन्ज़ार अपने कमाल को पहुंचे, लेकिन उन्होंने ने अपनी सियाह बातिनी और सख़्त दिली के बाइस कुछ भी फ़ाएदा न उठाया, बल्कि जब कोई आयते कुरआन आई उस को झुटला दिया और उस का इन्कार किया । 128 : जिन्हें जानता है कि वोह गुमराही इख़्तियार करेंगे और हक़ वालों को बातिल पर बताएंगे । 129 : उन की ईज़ा व अ़दावत पर 130 : आप की मदद फ़रमाने का और दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब करने का । 131 : या'नी येह लोग जिन्हें आख़िरत का यकीन नहीं है और बअस व हिसाब के मुन्किर हैं उन की शिदतें और उन के इन्कार और उन की नाइक़ हरकत आप के लिये तैश और क़त्क (रन्जिश) का बाइस न हों और ऐसा न हो कि आप उन के हक़ में अज़ाब की दुआ करने में जल्दी फ़रमाएं । 1 : सूरए लुक़्मान मक्किय्या है सिवाए दो आयतों के जो "وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ" से शुरूअ होती हैं । इस सू़रत में चार रूक़अ, चोतीस आयतें, पांच सो अड़तालीस कलिमे, दो हज़ार एक सो दस हफ़ हैं ।